'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १११ | वाराणसी, मंगलवार, २९ सितम्बर, १९५९ | पच्चीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन — भटिंडी (जम्मू) १२-९-'५९

गोसेवा के लिए अब समग्र दृष्टि से काम किया जाय

यह गुजरों की बस्ती है। हमें यहाँ भाई अहमद खींच लाये। अहमद हमारे साथ पदयात्रा में दस-बारह दिन रहे थे। वे अपने साथ गाय भी रखते थे। उन्होंने हमें अपनी गाय का दूध भी पिलाया।

गुजरों का आवश्यक और अहम पेशा

'बकरवाल' नाम के लोग बकरी पालते हैं और 'गुजर' लोग गाय। ये लोग पुश्त-दर-पुश्त यह काम करते आये हैं। गुजरों के दिल में गाय के लिए वही प्यार है, जो भगवान कृष्ण के दिल में था। जम्मू और कश्मीर में गुजरों की बहुत बड़ी जमात है। इस जमात का पेशा बहुत जरूरी और अहम पेशा है। जहाँ तक मैं समझता हूँ, कमसे कम आज के जमाने में इस पेशे के बिना अब नहीं चलेगा। हाँ, इससे आगे कुछ ऐसी जड़ी-बूटी या तरकारी मिल सकती है, जो दूध का स्थान ले ले। दूध की जरूरत न पड़े, इसके लिए साइन्स की खोजें हो रही हैं। लेकिन अभी तो दूध की जरूरत है। यह अलग बात है कि अभी हिन्दुस्तान के हरएक आदमी को दूध नहीं मिल रहा है, जो कि मिलना ही चाहिए।

दूध का अभाव

अब तक मेरा खयाल था कि हिन्दुस्तान के प्रति आदमी के लिए ५ औंस याने ढाई छटाँक दूध है। लेकिन अभी हमें दातार सिंहजी जो कि इस विषय के अच्छे जानकार हैं, मिले थे। उन्होंने बताया कि आपकी यह जानकारी तो उस जमाने की है, जब हिन्दुस्तान-पाकिस्तान एक थे। अभी दूध का प्रमाण बहुत घट गया है। इस समय हर आदमी के पीछे मुश्किल से ३ औंस दूध है और १५-२० प्रतिशत लोग ही उसका इस्तेमाल करते हैं। जो चीज सबको मिलनी चाहिए, वह आज नहीं मिलती, यह कोई अच्छी बात नहीं है। खास कर देश के सभी बच्चों की परवरिश के लिए दूध बहुत ही जरूरी है। पर वे उससे महरूम रह जाते हैं, इससे हमें बहुत तकलीफ होती है। हम चाहते हैं कि देश के हर नागरिक को दूध मिले और अभी उतना संभव न भी हो तो कम से कम हर बच्चे को तो दूध जरूर ही मिले।

जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं के निराकरण के लिए गायों की आवश्यकता

संसार में आबादी बराबर बढ़ रही है। उसी हिसाब से जमीन का रकबा घट रहा है। दिन-ब-दिन मामला पेचीदा होता जा रहा है। इसलिए इस समय गायों की और गुजरों के काम की जरूरत है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सारे गाँव-वालों को एक होना ही पड़ेगा, ऐसा मेरा पक्का यकीन है। अब अगर लोग अलग-अलग रहेंगे और मवेशियों का बँटवारा अनफरदा करेंगे तो कोई टिक नहीं सकेंगे। इसलिए जरूरत है सब जमातों, गिरोहों और समूहों के एक हो जाने की। मालकियत शामिल रहे। जमीन सबकी रहे। सहूलियत के खयाल उसका से बँटवारा भी कर लिया जा सकता है। ग्राम-परिवार बने। यह सब हो, तभी अब गो-सेवा का काम सफल हो सकता है।

गुजर लोग क्या करें ?

आपने अभी थोड़ी जमीन दी। मैंने वह प्यार के लिए ले ली। यह शुरुआत है। भूदान से दिल मुलायम बनता है, प्यार बढ़ता है। हमें दिल मुलायम होने के बाद दिलों को जोड़ना भी है। इसलिए आप यह समझ लीजिये कि इतनी-सी जमीन देने से गुजरों का मसला हल नहीं होगा। जैसे हवा, पानी सबके लिए हैं, वैसे ही जमीन भी सबके लिए होनी चाहिए। गाँव में ट्यूबवेल है। उसपर किसी एक शख्स की मालकियत नहीं होती। सारा गाँव उससे फायदा उठाता है। सबको उसका फायदा मिलता है और मिलना चाहिए। इसी तरह जमीन से भी सबको फायदा मिलना चाहिए। जमीन पर किसीकी मिलकियत जाती तौर पर, शख्सी तौर पर अनफरदा नहीं होनी चाहिए। यही अब गुजरों को समझना है और इसीके जैसा आचरण करना है।

आपका यह अहमद हमारे साथ यात्रा में था। श्रीनगर में भी हमसे मिलने आया था। इसके दिल में हमारे लिए बहुत प्यार है। यह चाहता है कि गुजर जमात की तरक्की हो और यह जमात ठीक ढंग से काम करे। ऐसा शख्स आपके पास है। आप इसका लाभ उठा सकते हैं और इसके साथ बैठकर आपकी तरक्की कैसे हो, इस बारे में सोचकर काम कर सकते हैं।

मेरी गाय है और मैं अकेला नस्ल-सुधार का काम कर सकता हूँ तो फिर सब मिलकर ही क्यों न करें ? मिलकर काम करने से ही गाय का धंधा बढ़ेगा। गाँव में कोआपरेटिव सोसाइटी भी हो। पर हाँ, 'कोआपरेटिव सोसाइटी' इस लफ्ज से डर भी पैदा हो सकता है। क्योंकि इन दिनों जो सोसाइटी बनती

है, वह अपनी मिलकियत कायम रखकर बनती है। जमीन के हिसाब से शेयर मिलते हैं और उसमें जो फैसले होते हैं, वे भी कसरत राय से ही होते हैं, कुल राय से नहीं। इससे मसले हल नहीं होते। यह बात वैसे भी अच्छी नहीं है, गुजरों के लिए तो बिलकुल ही अच्छी नहीं है। इसलिए ऐसी सोसाइटी बनानी चाहिए, जिसमें मुकम्मिल और कुल राय से फैसले हों। जाती मिलकियत छोड़कर सोसाइटी बनायी जाय। आज दुनिया में जो सोसाइटी हैं, उनमें और इसमें बहुत फर्क रहेगा। शख्सी मिलकियत न हो, जमीन मुश्तरका हो, चरागाह हो, नस्ल-सुधार हो और कुल राय से काम हो।

"कुल राय से काम कब और कैसे होगा?" यह समझने में ज्यादा अक्लवाले को तकलीफ होती है। आप छोटी अक्लवाले हैं, इसलिए आपको तकलीफ न होगी। अपने देश में पुराने जमाने से इसी तरह काम होता आया है। 'पाँच बोले परमेश्वर' यह हम अल्लाह की राय मानते थे, लेकिन आज चार बोले परमेश्वर, तीन बोले परमेश्वर होता है। ३ विरुद्ध २—इस तरह कसरत राय से फैलते होते हैं। मैं कहता हूँ कि यह अपने देश का तरीका नहीं है। जैसे हम घर में बैठते हैं, बहस करते हैं, नतीजे पर आते हैं और उसपर चलते हैं, वैसे ही गाँव में होना चाहिए। यह लगभग सौ घरों का गाँव है, उसमें भी एक ही जमात—गुजरों की—है। यहाँ मुश्तरका फैसले होने में कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। मैं तो चाहता हूँ कि जहाँ मुख्तलिफ जमातें हों, बकरवाल, गुजर, हिन्दू, सिख, मुसलमान हों, वहाँ भी फैसले मुश्तरका ही हों। लेकिन यहाँ तो आपके गाँव में कोई मुश्किल नहीं है। इसलिए यहाँ यह बात जरूर हो।

इन्सान इन्सान से दुश्मनी क्यों करता है?

इस जमाने में ये सियासी जमातें गाँव में जाकर एक-दूसरे के खिलाफ आग लगाती हैं। मैं कहना यह चाहता हूँ कि आपको उनके बहकावे में नहीं आना चाहिए। आप अपने गाँव को एक राज्य समझें। अपने गाँव के लिए मंसूबा आप स्वयं बनायें। अपने गाँव के टुकड़े न होने दें। मुकम्मिल से, कुल से काम होगा, जुज से काम नहीं होगा। गाँव में सियासत आयेगी तो यह मेरे खिलाफ राय देगा, वह उसके खिलाफ राय देगा और फिर सब एक-दूसरे के दुश्मन होंगे। इससे गाँव में अमन, सुख नहीं रहेगा, प्यार नहीं रहेगा। आज आपके गाँव में झगड़ा नहीं है, लेकिन वह इस सियासत से दाखिल हो सकता है।

आज अहमद कह रहा था कि उसके कुनबे के सभी लोग कत्ल हुए। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान, ऐसे दो टुकड़े हुए हैं तो आपने बड़ा भुगता है, सहन किया है। इस तरह इन्सान इन्सान से दुश्मनी क्यों करता है? इसकी वजह है यही सियासत। इन सियासतवालों के बहकावे में आयेंगे तो तबाह होंगे। इसलिए मैं आपको आगाह करना चाहता हूँ कि आप नेशनल कान्फ्रेंस हो या डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेंस हो या कोई भी अन्य पार्टी हो, सबको शख्सी तौर पर इन्सान के नाते देखिये। (१) लालच में फँसाना और (२) डराना, धमकाना—यही पार्टीवाले लोगों के हथियार हैं। लेकिन हमें निडर रहना चाहिए, डरना नहीं चाहिए, बेखौफ रहना चाहिए। हमें उनको कह देना चाहिए कि भाई, हम अपनी-अपनी राय देंगे, लेकिन हमारे गाँव में झगड़े नहीं होने देंगे, गाँव के टुकड़े नहीं होने देंगे।

पुरानी बातों का नया संस्करण करें

यहाँ सभा में सब मजहब के लोग बैठे हैं। कोई अल्लाह का नाम लेता है, कोई कृष्ण का का नाम लेता है तो कोई और किसीका। आप यह अच्छी तरह समझ लीजिये कि नाम चाहे जो लिया जाय, आखिर भगवान तो एक ही है। एक ही परमात्मा, एक ही हस्ती है। जैसे पानी, तन्नी, नीर, वाटर, उदक—ऐसे पानी के अलग-अलग नाम हैं, लेकिन पानी अलग नहीं है, एक ही है, वैसे ही भगवान भी एक है। अल्लाह, राम, कृष्ण, गॉड, मज्द—इस तरह अलग-अलग नाम लेते हैं, पर कोई भी नाम लिया तो भी भगवान हमारा ही है, यह मन में समझना चाहिए। आज हम सारे इकट्ठा बैठे हैं, ऐसे ही हमेशा बैठ सकते हैं। हम इस तरह एकत्र बैठकर खेती, व्यापार, धंधा, इनपर बहस कर सकते हैं। लेकिन जहाँ अल्लाह का नाम लेने का मौका आता है, वहाँ हम अलग-अलग हो जाते हैं। याने अल्लाह ही ऐसा कंबख्त निकला, जिसका नाम लेने के लिए हम अलग-अलग होते हैं, बँट जाते हैं। क्या हम इतना नहीं कर सकते कि अपने-अपने ढंग से नाम लें, अलग होकर लें और एक होकर भी लें? भाई, बहनें, बच्चे आदि सभी मिलकर हम अल्लाह का नाम ले सकते हैं। परमात्मा के नाम से जोड़ना है, तोड़ना-फोड़ना नहीं है। अल्लाह इसीलिए है। बड़े-बड़े पैगम्बर, नबीयों ने यह खयाल पेश किया है कि उसका नाम इन सबको एक कर सकता है। कुरानशरीफ में एक जगह पैगम्बर को सवाल किया गया है कि आप कभी 'रहमान कहते हैं और कभी अल्लाह कहते हैं तो क्या इस तरह दो भगवान हैं?' पैगम्बर ने जवाब दिया है कि जो अल्लाह है, वही रहमान है और जो रहमान है, वही अल्लाह है। कुरान में यह भी आया है कि अल्लाहताला के ९९ नाम हैं। क्या अल्लाह ९९ नामों में महदूद हो गये? वह तो नाम की एक माला बनायी है। लेकिन दरअसल अल्लाह के नाम अनगिनत, लातादाद हैं। जितनी सिफत, उतने उसके नाम हैं। कोई भी नाम लेने से दिल में प्यार मालूम होना चाहिए।

कश्मीर-वैली में ६०० साल पहले लल्ला हो गयी। कश्मीरी जबान में उसने अल्लाह का पैगाम लाया। हिन्दू, मुसलमान और दूसरे सभी उसे याद करते हैं। क्योंकि वह एक ऐसी औरत हो गयी, जो अल्लाह में फना (लीन) हो गयी थी। कुछ लोग अल्लाह में फना होते हैं और कुछ उससे अलग रहते हैं ऐसे दो प्रकार के भक्त होते हैं। लल्ला फना-फी-अल्लाह हो गयी। इसीसे उसके लिए सबके मन में बहुत प्यार, इज्जत है। ये इबादत की बातें लल्ला, कबीर और दूसरे नबियों ने भी चलायीं। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूँ कि हम पुरानी बातें नये सिरे से सीखें और सब इकट्ठा होकर अल्लाह का नाम लें। ◆◆◆

एक अमीर यात्रा के लिए निकला। उसके साथ एक गरीब नौकर भी था, जो रसोई बनाकर उसको खिलाता था। उस अमीर ने २-४ साल घूमकर सारे भारत की यात्रा की। सब तीर्थों में नहाकर आखिर जब घर पहुँचा तो उसे उसके नौकर ने एक ऐसी तरकारी खिलायी, जिससे बहुत बदबू आती थी। मालिक ने पूछा कि तुमने मुझे यह क्या खिलाया? नौकर ने जवाब दिया कि मैंने आपको बड़ी पाक (पवित्र) तरकारी खिलायी। जब हम यहाँसे निकले थे, तब मैंने अपने साथ कुछ आलू लिये थे। जैसे आपने हर तीर्थ में स्नान किया, वैसे मैंने आलू को भी हर तीर्थ में नहलाया और फिर उस आलू की तरकारी आपको खिला दी, जो गन्दी नहीं, बल्कि बड़ी पाक है। आप सब तीर्थों में स्नान कर चुके तो क्या आप गन्दे हैं? यह सुनते ही मालिक समझ गया कि तीर्थों में नहाना एक बात है और दिल का पाक होना दूसरी बात। ◆◆◆

प्रश्नोत्तर

ऊधमपुर (जम्मू) ३-९-'५९

समाज सिन्धु है, व्यक्ति बिन्दु !

व्यक्ति और समाज के हितों में टक्कर होते रहने से तरक्की असंभव

प्रश्नः—क्या व्यक्ति और समाज के हित में विरोध है ?

उत्तरः—हमारी कई उलझनें इसलिए पैदा होती हैं कि हम शब्दों की व्याख्या ठीक नहीं करते। व्यक्ति याने क्या, समाज याने क्या ? व्यक्ति याने क्या शरीर, मन, इन्द्रियाँ या आत्मा ? अगर व्यक्ति से आपका मतलब इन्द्रियाँ हो तो आपके सवाल का एक उत्तर आयेगा, मन हो तो दूसरा उत्तर आयेगा और आत्मा हो तो तीसरा ही उत्तर आयेगा। इसीलिए शंकराचार्य ने कहा था कि पहले 'कोऽहम्'—मैं कौन हूँ, इसका फैसला करो, इसका ठीक स्वरूप पहचानो।

समाज एक सिन्धु है और हम हैं एक बिंदु। बिंदु का श्रेय सिन्धु में दाखिल होने में ही है। बिंदु अलग रहेगा तो सूख जायगा, सिन्धु में लीन होगा तो महान बन जायगा। हम अपने को एक शरीर में बँधा हुआ मानेंगे तो छोटे पड़ेंगे। उसके बजाय समाज में एकरूप हो जायँगे और समझ-बूझकर अपना व्यक्तित्व समाज में लीन करेंगे तो हमें अत्यंत समाधान होगा। इसमें 'समझ-बूझकर'—यह शब्द महत्त्व का है। तुलसीदासजी ने कहा है: 'परहित बस जिनके मन माहीं, तिन कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।' जहाँ हम अपना हित समाज से तोड़कर अलग मानते हैं, वहाँ हम अखंड को काटकर अपना एक टुकड़ा बनाते हैं। फिर हमें समाधान कैसे हासिल होगा ? इसलिए मैं कौन हूँ, इसको ठीक-ठीक समझना ही व्यक्तिगत साधना है। समाजवाद के खिलाफ व्यक्तिस्वातंत्र्य, फैक्टरी, फार्म की लिबर्टी और स्वतंत्रता वगैरह में जोर किसपर देना चाहिए, यही सवाल है। ये सारे सवाल इसलिए पैदा होते हैं, क्योंकि हम अपना स्वरूप ही नहीं समझते कि हम कौन हैं। आत्मस्वरूप के ज्ञान के अभाव में ये सारे सवाल पैदा होते हैं।

समाज का एक प्रवाह है। इसमें अनेक व्यक्ति आयेंगे और जायँगे ! यह प्रवाह चालू रहेगा। इससे भिन्न मेरा एक अलग प्रवाह है। मैं पिछले जन्मों में घोड़ा, गधा, ऊँट वगैरह था। इस जन्म में मैं हिंदुस्तान का मनुष्य हूँ। मेरा प्रवाह और समाज का प्रवाह—इन दोनों के छेदनबिंदु पर मैं हूँ।

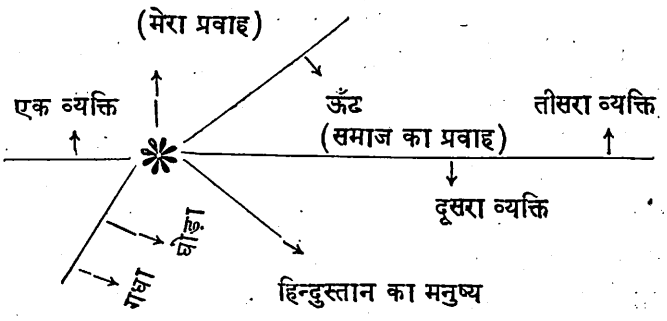

मेरे और मानव-समाज के प्रवाहों के छेदनबिंदु पर मेरा और समाज का संगम है। इस तरह एक बिंदु पर व्यक्ति और समाज का मिलन होता है। उस बिंदु पर दोनों का हित समान होता है। अगर आपसे पूछा जाय कि वह बिंदु किस लाइन पर है तो आप कहेंगे कि दोनों लाइनों पर है। अगर पूछा जाय कि वह बिंदु किस लाइन पर ज्यादा है तो आप यही जवाब देंगे कि दोनों पर समान है। आपके इस जन्म में उस बिंदु पर आपका और मानव-समाज का हित एक है। दूसरे जन्म में आपका हित दूसरा हो गया और आप जिस समाज में जन्म लेंगे, उस समाज के साथ आपका हित जुड़ेगा। मेरा एक अलग प्रवाह है और यह अनेक जन्मों का प्रवाह है। इस जन्म में मेरा और समाज का हित सौ फ़ी सदी एक है।

मैं बीमार पड़ा तो उसमें मेरा भला नहीं है और समाज का भी भला नहीं है। समाज संपन्न बने तो मैं भी संपन्न बनूँगा और मैं संपन्न बनूँ तो समाज भी संपन्न बनेगा। आज एक को लूटकर दूसरा संपन्न बनता है, इसलिए झगड़े पैदा होते हैं। आपकी और समाज की सम्पन्नता एक ही हो सकती है, बशर्ते कि आप इस समाज का हित और अपना हित एक मानें। अगले जन्म में आपको इस तरह मानने की जरूरत नहीं रहेगी, न इस समाज के साथ एकरूप होने की ही जरूरत रहेगी। फिर आपको दूसरे समाज के साथ, जिसमें आप जन्म लेंगे, एकरूप होना होगा। यह समाज आपकी फिक्र नहीं करेगा।

◆

प्रार्थना-प्रवचन

जम्मू १०-९-'५९

पार्टियाँ आग लगानेवाली हैं, ! सियासत तोड़नेवाली है !!

जमाना बदल रहा है। दस-बारह वर्षों में हम कहाँसे कहाँ पहुँच गये। विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली। आज के साइन्स की तुलना हजार वर्ष पहलेवाले साइन्स से नहीं की जा सकती और न चन्द वर्षों पहलेवाले साइन्स से ही की जा सकती है। हिरोशिमा पर एक बम गिरा। जिससे वह पूरा शहर खत्म हो गया। हजारों लोग मरे, लाखों जख्मी हुए और करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हो गयी। एक बम का कितना भयानक परिणाम आया ! इस समय जो अस्त्र बन रहे हैं, वे उस बम से भी हजार गुनी अधिक ताकतवाले हैं। मैं यह बात अपनी तरफ से नहीं कह रहा हूँ। यह एक साइन्टिस्ट ने कहा है।

विज्ञान और विकेन्द्रीकरण

साइन्टिस्ट दिन पर दिन प्रगति कर रहे हैं। अब वे ऐसी कोशिश कर रहे हैं कि यहाँ बैठे-बैठे ग्रह पर, चन्द्र पर और मंगल पर शस्त्र फेंक सकें। वह शस्त्र हजारों मिलों तक ठीक दिशा में जायगा। और कहीं बम गिराना हो तो गिरायेगा और वापस आयेगा। समझने की जरूरत है कि इस प्रकार संहार करने की शक्ति इंसान के हाथ में आ गयी है।

एटम में संहारशक्ति है, वैसे ही उसमें रचनात्मक काम करने की शक्ति भी पैदा हो सकती है। जैसे बिजली गाँव-गाँव

में ली जा सकती है, वैसे ही एक एटम की ताकत भी गाँव-गाँव में विकेन्द्रित की जा सकती है और उसका उपयोग रचनात्मक कामों में किया जा सकता है। जरूरत है साइन्सवालों के विचार बदलने की। साइन्टिस्ट इस ओर ध्यान दें तो यह बहुत जल्दी हो सकता है।

दुनिया शान्ति चाहती है

आपने पेपर में पढ़ा होगा कि आइक इङ्गलैंड गये, तब उनके स्वागत में हजारों लोग रास्ते पर खड़े हुए एक ही आवाज लगा रहे थे कि "वी वान्ट पीस" हमें शान्ति चाहिए, शान्ति चाहिए। वहाँ आइक बोले कि जनता शान्ति चाहती है, लेकिन हमीं लोग अशान्ति पैदा करनेवाले हैं। हम याने सरकार। दुनिया-भर के लोग शान्ति चाहते हैं, यह बात आइक जैसे एक फौजी नेता के ध्यान में आयी है। इससे वह समझ सकता है कि साइन्स के जमाने में साइन्स की ताकत अगर हिंसा के साथ जुड़ेगी तो दुनिया का खात्मा हो जायगा। साइन्स को ताकत अहिंसा के साथ जुड़नी चाहिए। यह बहुत आवश्यक है। यह बात अब उनके ध्यान में आ रही है, जिन्होंने शस्त्रास्त्र बढ़ाये और आज भी बढ़ा रहे हैं। आज भी वे शस्त्रास्त्र बढ़ा रहे हैं, उसकी वजह यह है कि उन्हें नया रास्ता नहीं सूझ रहा है। इस समय सियासत-वालों का हिंसा की ताकत पर विश्वास नहीं रहा और अहिंसा की ताकत पर विश्वास जमा नहीं है।

सियासत और समस्याएँ

अब हिंसा से या सियासत से मसले हल नहीं होंगे। इन दस-बारह सालों में सियासी तरीकों से कौन से मसले हल हो सके हैं? क्या कश्मीर का मसला हल हुआ? बर्मा का मसला हल हुआ? गोआ, सिलोन, कोरिया, मलाया, ईजिप्ट, इजराइल और बर्लिन के मसले हल हुए? आप गहराई में जाकर देखेंगे तो पता चलेगा कि सियासत से मसले हल नहीं होते। सियासत से तो नये मसले पैदा होते हैं। अभी हाल में ही हिन्दुस्तान और चीन की सीमा का सवाल पैदा हुआ है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि सियासत से मसले हल नहीं होंगे।

खुशी की बात है कि अभी एक मसला हल होने की सूरत में आया है, पानी का मसला। लेकिन क्या वह सियासत से हल हो रहा है? नहीं, वर्ल्ड बैंक के कारण उसे हल करने के लिए प्रेम का तरीका अपनाया गया है। इसलिए अब कनाल वाटर का झगड़ा मिटेगा। यह प्यार की बात है, सियासत की नहीं। अगर यही मसला सियासत से हल करने की बात होती तो यह भी लटकता ही रह जाता।

सत्ता चन्द लोगों के हाथ में

हमें अब नयी ताकत बनानी होगी। वह ताकत, जिसे मैं लोकशक्ति कहता हूँ, लोग स्वयं अपना शासन चलायें। वर्तमान शासन को विकेन्द्रित करना होगा। अभी जो शासन है, वह चाहे वेलफेयर के नाम से हो, डेमोक्रेसी के नाम से हो या किसी भी नाम से हो, उसके कारण कुल ताकत एक मरकज में आ जाती है और सारे समाज पर भार बढ़ जाता है। फिर समाज की तरक्की के लिए चन्द लोग मंसूबा करते हैं। कानून बनाते हैं और कानून की रक्षा के लिए पुलिस तथा लश्कर रखते हैं। उन चन्द लोगों के हाथ में ताकत आ जाती है। आज दुनिया को बनाना या बिगाड़ना चन्द लोगों के हाथ में है। आइक, ख्रुश्चेव, मैकमिलन जैसे चार-पाँच लोग हैं, मुझे उन सबके नाम याद भी नहीं हैं और उनके नाम याद रखने से भी क्या होगा? कोई भगवान के नाम तो हैं नहीं, जो उन्हें याद करने से पुण्य होगा। खैर, उन्हीं चार-पाँच लोगों के हाथ में दुनिया को आग में झोंकने की और शांति पैदा करने की ताकत है। चाहे कम्युनिज्म आये, सोशलिज्म आये, चाहे डेमोक्रेसी आये या वेलफेयरिज्म आये, तब भी ताकत तो इन चन्द लोगों के हाथ में ही रहनेवाली है।

डेमोक्रेसी का ढोंग

एक भाई मुझसे कह रहे थे कि फलानी चीज पंडित नेहरू की समझ में आ जाय तो काम बन जाय और उनकी समझ में नहीं आये तो काम नहीं बनेगा। जहाँ ऐसी फारमल डेमोक्रेसी होती है, वहाँ उसका रूपांतर देखते-देखते फौजी शासन में हो जाता है। क्या कभी आप मिट्टी का रूपांतर दही में होते हुए देखते हैं? दूध का रूपांतर दही में हो सकता है। क्योंकि वे एक-दूसरे के नजदीक हैं। मिट्टी का रूपांतर दूध में नहीं हो सकता तो डेमोक्रेसी का रूपांतर फौजी सत्ता में कैसे हो सकता है? इसलिए सही बात यह है कि आज असल में डेमोक्रेसी है ही नहीं। इस समय डेमोक्रेसी हो या वेलफेयरिज्म हो या सोशलिज्म। सबका आधार है फौज। जहाँ सबका रक्षण करनेवाला एक ही देवता (फौज) है, वहाँ सारे एक ही हैं। वे चाहे आपस-आपस में लड़ें, लेकिन उनमें कोई भेद नहीं है। उनमें ज्यादा भेद समझने की जरूरत भी नहीं है। उनमें से कोई भी आज हिंसा पर कंट्रोल करना चाहे, नियंत्रण करना चाहे, तब भी वह नहीं हो सकता। क्योंकि उन सबका दारोमदार फौज है और सारी सत्ता चंद लोगों के हाथ में है।

कभी सत्ता इनके हाथ में रहेगी, कभी उनके। कभी नेशनल कांफ्रेस के हाथ में रहेगी ओर कभी डेमोक्रेटिक नेशनल कांफ्रेन्स के हाथ में। लोग बिचारे अपना नसीब अजमाते रहेंगे। यह जो डेमोक्रेसी का एक प्रकार का ढोंग चल रहा है, उससे मुक्ति हासिल करनी होगी और लोगों की शक्ति बनानी होगी, तभी शांति हासिल होगी।

हिंदुस्तान में कांग्रेस पार्टी का राज्य है। उसके बायें पी० एस० पी०, कम्युनिस्ट आदि हैं और दायें है स्वतंत्र पार्टी। दो साल के बाद ये सारी जमातें जनता के पास पहुँचेंगी और कहेंगी कि हमारे उसूल ये हैं। इतने अच्छे उसूलों के कारण सत्ता हमारे हाथ में रहेगी तो हम आपको सुखी बनायेंगे। आप हमको वोट नहीं देंगे तो आप दुःखी बनेंगे। दो-ढाई साल के बाद चुनाव आनेवाला है। तब यही चलेगा। सब सामनेवाले पक्ष की निंदा और अपने पक्ष की स्तुति करेंगे। [चालू]

अनुक्रम

१. गो-सेवा के लिए अब समग्र दृष्टि से काम किया जाय
भटिंडी १२ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६९१
२. समाज सिन्धु है, व्यक्ति बिन्दु···
ऊधमपुर ३ सितम्बर '५९ "६९३
३. पार्टियाँ आग लगानेवाली हैं! सियासत तोड़नेवाली है!!
जम्मू १० सितम्बर '५९ "६९३

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in